चतुर्थ अध्याय

'कामना' और 'एक घूँट' : 'कामायनी' की पूर्वपीठिका

" 'कामना' और 'एक घूँट': ' कामयनी ' की पूर्वपीठिका "

महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित काव्य रचना 'कामायनी' इस युग की सर्वोत्तम कृति भारतीय चेतना का गौरव ग्रंथ है। हिंदी आलोचकों ने 'कामायनी' को महाकाव्य की कोटी में रखा अपितु 'कामायनी' का निर्माण अनायस या एकदम से नहीं हुआ है। 'कामायनी' सृजन की ोठिका प्रसाद के 'कामना' और 'एक घूँट' नाट्यकृतियों में दृष्टिगोचर होती है। ऐसा प्रतीत होता है च्य तीनों कृतियों में प्रसाद जी ने एक दार्शनिक विचारधारा को प्रवाहित किया है। इस अध्याय में प्रसाद की विवेच्य तीनों रचनाओं के बीच तर्क- संगत संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है।

डॉ. गोविंद चातक जी लिखते हैं- " जहाँ तक 'कामना' के रूपक तत्व का प्रश्न है, ऐसा प्रतीत ा है कि समाधान के संबंध में प्रसाद पूरी तरह से आश्वस्त न थे। इसीलिए अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने ही समस्या को 'कामना' के अतिरिक्त 'एक घूँट'और 'कामायनी' में उठाकर संतोष किया।" [१]], 'कामायनी' महाकाव्य है और अन्य दोनों नाट्यकृतियॉं, इस दृष्टि से 'कामायनी' में वैचारिक रता निसंदेह अधिक व्यापक है। अत: विवेच्य तोनों कृतियों में एक ही समस्या को उठाया है, ऐसा कर उनका एक स्तर पर अध्ययन, विश्लेषण कराना अनुचित प्रतीत होता है।

'कामना' और 'एक घूँट'का सीधा 'कामायनी' के साथ संबंध स्पष्ट करना जटिल या कठिण है। इसलिए अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से इस अध्याय को मैंने निम्नलिखित भागों में जित किया है -

१. 'कामना' और 'कामायनी'

२. 'एक घूँट'और 'कामायनी'

३. 'कामना' और 'एक घूँट': 'कामायनी' की पूर्वपीठिका

'कामना' और 'कामायनी'

निसंदेह 'कामायनी' प्रसाद जी की अंतिम महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस महाकाव्य के सृजन के ग ही प्रसाद जी असाधारण ख्याति प्राप्त कर सकें। प्रसाद जी ने 'कामायनी' को जगत की कामना ूप में प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य का कोई भी जागरूक अध्येता 'कामना' और 'कामायनी' को र इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुँच सकता है की दोनों रचनाओं की परिकल्पना एवं आधारभूमि क गहरा साम्य है जो

१.डॉ. गोविंद चातक- ' प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना'- पृष्ठ-११२

स्मिक नहीं हो सकता। डॉ. जगदीश गुप्त जी ने लिखा है- " प्रसाद की चिंतन- धारा की गति को त्विक रूप में परखने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें निहित केंद्रीय विचार रेखा की खोज की ।। 'कामना' और 'कामायनी' यह दो ऐसे बिंदु हैं जिन्हें मिलाकर देखने से यह रेखा स्पष्ट हो उठती १

'कामना' और 'कामायनी' में मानव सृष्टि के पूर्व दैवी सृष्टि की कल्पना की गई है। 'कामना' पराधों और पापों से अपरिचित तारा की संतान अपने को देव-परिवार का मानती है, जो खेल- ने आयी है। इसके अतिरिक्त द्वीपवासियों का उपासना गृह में पिता (ईश्वर) का पंच्छियों द्वारा श सुनना तथा वनलक्ष्मी का आशिर्वाद देने का प्रसंग उन्हें देव-परिवार का घोषित करते हैं। दूसरी 'कामायनी' के मनु 'उच्छृंखल स्वभाव' एवं 'निर्बाध आत्मतुष्टि' में रत रहनेवाले देवों के अंतिम निधि हैं। जो मानव सृष्टि के आदि- पुरूष के रूप में चित्रित हैं । 'काननना' का देव-परिवार ास- मुक्त था और 'कामायनी' में देव- सृष्टि विलास-वासना की ही प्रतीक मानी गयी है।

विवेच्य रचनाओं में विराट पृष्ठभूमि का अभास देने तथा प्रारंभिक सृष्टि के विकास की पृष्ठभूमि ागर का चित्रण हुआ है। 'कामायनी' में सृष्टि का प्रारंभ और विकास जलप्लावन या प्रलय से धित होने के कारण स्वभावतः समुद्र तट पर घटित होती है। उधर 'कामना' में 'फूलों का न' समुद्र तट पर स्थित दिखाया गया है। दूसरी ओर यह विराट पृष्ठभूमि 'कामायनी' के मनु 'कामना' की कामना इन दो पात्रों के मानसिक परिवर्तन एवं मानसिक उथल-पुथल को अधिक ता से स्पष्ट करती है।

ायनी' में देव-सृष्टि के विनाश के पश्चात केवल मनु शेष रह जाते हैं। मनु अपने बचने की खुशी था कल्याण भावना हेतु यज्ञ करते हैं। वहीं उनकी भेंट श्रद्धा से होती है। दोनों मिलकर नवीन व- समाज की सृष्टि करते हैं। 'कामायनी' की भाँति 'कामना' में भी प्रसाद जी ने मानव समाज के मेक विकास की पृष्ठभूमि में आदिम साम्यवाद की स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है, जिसका संकेत ाने 'कामना' के प्रारंभ में उद्धृत महाभारत की पक्तियों में दिया है। 'कामना'में ऐसे समाज का ण किया है, जहाँ न राज्य था न राजा, न दंड़क और न ही दंड़ देनेवाला। धर्म से ही प्रजा पर रक्षा करती थी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विवेच्य दोनों ग्रंथो में मानव के आरंभिक जीवन चेत्रण है। दोनों कृतियों में यह बताया गया है कि जैसे-जैसे मानव नूतन आवश्यकताओं का सृजन ा है, वैसे-वैसे उसका विकास होता है और उसका अधःपतन होता है। उनके जीवन में कलह, ई एवं अशांती बढ़ते जाती है। 'कामना'के विलास, कामना, लालसा, लील, विनोद आदि और ायनी' के मनु, श्रद्धा और इड़ा आदि पात्रों को भी इसी कारण कलह, संघर्ष एवं अशांति का ना करना पड़ता है।

---

१. डॉ. कृष्णदेव प्रसाद गौड़- 'प्रसाद का साहित्य'- पृष्ठ १४५ (से उद्धृत)

'कामना' के विलास और 'कामायनी' के मनु को भी कुछ समान परिस्थितियों में रखा गया है। क मन में काम- लालसा जागती है तब श्रद्धा आशा दृढ़ता और कर्मण्यता का संदेश देते हुए समर्पण करती है। दूसरी ओर अपने कुकर्मों के कारण निष्कासित युवक विलास के मन में द्वीप ासक बनने की लालसा उत्पन्न होती है। कामना विलास के अद्भूत प्रभावशाली व्यक्तित्व और पट्ट पाकर उसे आत्मसर्मपण करती है। विलास की भाँति ही मनु भी मदिरा या सोमरस पान हैं। विलास स्वर्ण प्राप्त करने हेतु पशुओं की हत्या करता है और मनु ' मित्रवरूण ' यज्ञ करने ुगया आदि पशुओं की हत्या करते हैं। 'कामना' में विलास कामना को द्वीप की रानी बनाता है स्वयं मंत्री व शासक बनता है। तो 'कामायनी ' के मनु सारस्वत देश में इड़ा को रानी बनाकर नियामक बन बैठता है। 'कामना' का विलास अत्याधिक स्वर्ण प्राप्त करने तथा नवीन नगर की पर शासन करने हेतु नदी पार के देश पर आक्रमण करता है। तो 'कामायनी' के मनु इड़ा से कृत होता है और जनक्रांति के परिणाम स्वरूप सारस्वत प्रदेश की जनता से युद्ध करता है। : 'कामना' में विभिन्न विषमताओं से कामना इतनी पीड़ित हो जाती है कि वह विलास को उसी ! छोड़ देती है जैसे 'कामायनी' में इड़ा मनु को छोड़ देती है।

'कामना' और 'कामायनी' की कथा प्रतीकात्मक या संकेतार्थ गार्भित है। 'कामना' के सभी पात्र ा मनोवृत्तियों के प्रतीक हैं। साथ ही विलास, लालसा आदि बुद्धि पक्ष के, तो विवेक,संतोष आदि पक्ष के प्रतीक है। उधर 'कामायनी' में 'मनु' मानव मन के प्रतीक हैं, श्रद्धा- हृद्य पक्ष और बुद्धि पक्ष की प्रतीक हैं। दोनों रचनाओं में हृद्य और बुद्धि पक्ष के संघर्ष एवं समन्वय का चित्रण है। डॉ. मिश्र जी ने लिखा है-"कामना' को 'कामायनी' की भूमिका कहा जा सकता है,क्योंकि ु सृजन का मूल तत्व बुद्धिवाद, यंत्रवाद का प्रत्याख्यान एवं हृद्यवाद- प्रकृतिवाद का प्रतिपादन [१]

अस्तु,'कामना' और 'कामायनी' में घटना साम्य दिखाई देता है। 'कामायनी' का आरंभ प्रलय ाटना से होता है। दूसरी ओर यदि 'कामना' का आरंभ प्रलय के कारण नहीं हुआ है किंतु ' ना' के मानसिक द्वंद्व का भोगवाद की अतृप्तता का

ा ही है जो सारे द्वीप को परिवर्तित कर देता है।विवेच्य रचनाओं के अंत में आनंद रस की ा भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार है। 'कामायनी' में मनु को अंत में सामरस्या की प्राप्ति होती कुछ ऐसी ही उपलाब्धि 'कामना' में कामना को भी संतोष से विवाह करके होती है। आ. उमेश त्री लिखते हैं-" 'कामायनी' के प्रलय कल्पना और आनंदवाद की प्रस्तावना हमें इस (कामना) नाटक ाल जाती है।" [२]

डॉ. रामप्रसाद मिश्र- 'प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण' - पृष्ठ १९३

आ.उमेश शास्त्री- 'प्रसाद के साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन'-पृष्ठ ५

विवेच्य दोनों रचनाओं में और एक समानता का सूत्र दिखाई देता है, वह है- उद्देश्य की नता। 'कामायनी' की रचना इस धारणा को केंद्र में रखकर हुई है कि 'जीवन के समस्त प्रश्नों के में अर्थ का प्राधान्य है।'दूसरी और 'कामायनी' की सर्जना का केंद्रबिंदु है-इड़ा और श्रद्धा का वय। अर्थात बुद्धि और हृदय का समन्वय। दोनों ही अवस्था में कवि मानवता के कल्याण को ा लक्ष्य मान कर चला है। दोनों रचनाओं का सृजन दार्शनिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक दृष्टि को ने रखकर किया गया है। डॉ. शांति मलिक लिखते है- " प्रस्तुत रचना ('कामना') 'कामायनी' के न का पूर्व रूप है।" [१]

'कामायनी' महाकाव्य है, तो 'कामना' नाट्यरूप है। इन में समनताओं के अतिरिक्त विषमताएँ खी जा सकती हैं। 'कामना' में आदिम नारी-प्रधान समाज की कल्पना मुख्य है। नायिका कामना ा द्वीप के उपासना-गृह का नेतृत्व करने से इस बात की पुष्टि होती है। दूसरी ओर 'कामायनी' नु आदिम-पुरूष प्रधान समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनु की अपेक्षा कामना नारी पात्र अधिक शील दिखाया गया है। स्पष्ट है कि यदि ' कामायनी' में मन का सांकेतिक रूप प्रधान है तो ना' में मन की वृत्तियों का।

'कामायनी' में कामगोत्रजा श्रद्धा व्यथित मनु को सृष्टि के विकास के लिए आशा, दृढ़ता कर्मण्यता का संदेश देते हुए नवजीवन के आरंभ की प्रेरणा देता है। उसी प्रकार 'कामना' में स का आगमन कामना को अतृप्तता को पूर्ण करने प्रकट हुआ है। स्पष्ट है कि जिस प्रकार श्रद्धा ागमन मनु के जड़ अस्तित्व में नई कामनाएँ जगता है। उसी प्रकार विलास कामना के मन में नई ाएँ जगाता है। फिर भी दोनों का प्रभाव भिन्न है। क्योंकि विलास कुप्रवृत्ति का तो श्रद्धा ावृत्ति का विकास करते हैं।

कामना' की मुख्य समस्या 'स्वर्ण-लालसा' है। जिसे सभी वृत्तियों एवं समस्याओं के मूल में दिखाया है। किंतु 'कामायनी' का यह मूल संदेश है कि श्रद्धा (हृदय) और इड़ा (बुद्धि) के समन्वय से ोपलब्धि होती है। । 'कामायनी' की अपेक्षा 'कामना' में युग की समस्याएँ बहुत स्पष्ट है। डॉ. ा जी ने लिखा है- " ' कामना' में एक और विलास पर आधारित पाश्चात्य सभ्यता के संपर्क में अहिंसामूलक, आदर्शवादी, योगपरक भारतीय संस्कृति के ह्रास का चित्रण है। दूसरी ओर स्वर्ण के माध्यम से विकासमान विलासपूर्ण स्वर्ण-सभ्यता का विरोध।" [२] इसके विरूद्ध 'कामायनी' की ाएँ स्वाभाविक, स्पष्ट न होने के कारण चिंतन अधिक गंभीर और व्यापक है।

'कामायनी' की अपेक्षा 'कामना' के प्रतीक स्पष्ट है। डॉ. चातक जी इस संबंध में लिखते हैं- मायनी' का रूपक तत्व जादा सांकेतिक और व्यंजनायुक्त है- उसकी तुलना में 'कामना' के

शांति मलिक- 'प्रसाद के नाटकों की शिल्प-विधी का विकास'- पृष्ठ ११

. गोविंद चातक -'प्रसाद के नाटक स्वरूप और संरचना'- पृष्ठ ११५

प्रतीक इतने स्पष्ट है कि वे हाड़मांस का शरीर धारण करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं।" [१] इस से 'कामना' का मूल्यांकन एकदम 'कामायनी' के स्तर पर किया जाना अनुचित है।

'कामना' में मानव-मनोवृत्तियों के मानवीकरण से प्रसाद जी दृश्य रूप में जितना कुछ कहना ते थे, उसके कई अधिक वे काव्य रूप में विचारों की परिपक्वता के साथ 'कामायनी' की ासिक सांस्कृतिक पद्धति से कह पाये हैं। डॉ. सरोज पांडेय जी के मतानुसार - " 'कामना' क 'कामायनी' का प्रथम चरण प्रतीत होता है।" [२]

संक्षेप में दोनों रचनाओं में विषमताओं की अपेक्षा साम्यता अधिक हैं। विवेच्य रचनाओं की ा करने के लिए कुछ अन्य सूत्रों का विवेचन किया जा सकता है, परंतु उसकी आवश्यकता नहीं क्योंकि मेरी दृष्टि से विवेच्य दोनों रचनाओं के साम्य-भेद को स्पष्ट करने लिए उपर्युक्त विश्लेषण त है।

'एक घूँट' और 'कामायनी' -

जिस प्रकार 'कामना' और 'कामायनी' के विभिन्न सूत्रों में साम्य भेद हैं उसी प्रकार 'एक घूँट' 'कामायनी' में कुछ सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में साम्य भेद दृष्टिगोचर होता है। डॉ. चक्रवर्ती ने लिखा है ' कामायनी की रचना १९२५ से प्रारंभ हो गई थी। ऐसे समय प्रत्याभिज्ञा दर्शन का गहरा प्रभाव द पर था। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने या तो कामायनी से अवकाश निकालकर या केवल मनः तुष्टि लेए ही 'एक घूँट' की रचना की होगी। दोनों परिस्थितियों में भी 'एक घूँट' की रचना किसी ष्ट उद्देश्य के निमित्त ही हुई है।" [३]

'कामायनी' में मनु मानव- मन का प्रतीक है। श्रद्धा हृदय का और इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। ायनी' में प्रसाद जी ने मनु, श्रद्धा, और इड़ा इन पात्रों के माध्यम से मानव-जीवन प्रस्तुत किया प्रतःस्पष्ट है कि 'कामायनी' में प्रसाद जी ने भावनाओं का मानवीकरण किया है। दूसरी ओर 'एक में प्रकृति के विभिन्न रूपों- वनलता, मुकुल, रसाल, कुंज आदि का मानवीकरण किया है। साथ ही ा, झाड़ूवाला आदि पात्र भी हैं, जिनका स्वतंत्र मानवीय व्यक्तित्व है। 'एक घूँट' में चित्रित आनंद पात्रों के रूप में भावों का मानवीकरण भी दृष्टव्य है। स्पष्ट है कि 'एक घूँट' में प्रकृति का ीकरण किया है जब की 'कामायनी' में मानवी-भावनाओं का। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि य दोनों कृतियों की कथा प्रतीकात्मक या संकेतार्थ गर्भित है।

'एक घूँट' में चित्रित आनंद की मान्यता है कि विश्व की कामना का मूल रहस्य आनंद है, से विकास के समस्त सूत्र जुड़े हैं। आनंद दुःख का अस्तित्व ही नहीं मानता। वह कहता हैं, " मैं

---

१. डॉ. गोविंद चातक -'प्रसाद के नाटक स्वरूप और संरचना'- पृष्ठ १०९

२. डॉ. सरोज पांडेय- 'प्रसाद के नटक: मनोसामाजिक विश्लेषण'- पृष्ठ ६२

३. डॉ. चक्रवर्ती-'प्रसाद की दार्शनिक चेतना'- पृष्ठ ३६४

ार्शनिकों से मतभेद रखता हूँ जो यह कहते आये हैं कि संसार दु:खमय है और दु:ख के नाश ाय सोचना ही पुरूषार्थ है।" [१] आनंद के मतानुसार आनंदातिरेक से आत्मा के साकार रूप ग्रहण का नाम जीवन है। व्यवहारिक दृष्टि से यह सामरस्य की ही जीवनपरक दृष्टि है। इसकी विस्तृत ा प्रसाद जी ने 'कामायनी' में की है। 'कामायनी' का अंतिम सर्ग है आनंद। इस सर्ग में मनु, ,इड़ा, मानव और सभी सारस्वत नगरवासी मेरा-पराया यह भेद भूल जाते हैं। सभी एकात्म हो हैं और सर्वत्र अखंड़ आनंद की स्थापना हो जाती है। वास्तव में 'अखंड़ आनंद' जीवन की ाम अनुभूति है। यह अनुभूति सामरस्य की है जिसमें मनुष्य सारे भेदों तथा विषमताओं से उपर जाता है। विवेच्य रचनाओं में चित्रित आनंदवाद के संबंध में डॉ. चातक जी लिखते हैं- मायनी' का सामरस्य और आनंदवाद दार्शनिक धरातल पर प्रतिष्ठित हुआ है, जब की 'एक घूँट' ह शुद्ध- लौकिक-व्यवहारिक स्तर पर प्रवृत्तिपरक विचारधारा के रूप में समाहित है।" [२] पष्ट है कि दोनों कृतियों में सामरस्य और आनंदवाद का प्रतिपादन हुआ है।

'एक घूँट' और 'कामायनी' में चित्रित प्रेम की विशिष्ट रूप में अभिव्यंजना हुई है। "कामायनी' त्रित प्रेम का स्वरूप दिव्य और अलौकिक हो गया है। इतना नहीं तो प्रेम बुद्धि का, तर्क-वितर्क ात्र छोड़कर हृदय की शुद्ध भावभूमि पर आ जाता है और आनंदलोक की सृष्टि करता है। ायनी' में यह दर्शन उसके मुख्य भाग पर सर्वत्र व्याप्त है, किंतु 'एक घूँट ' में भी प्रसाद जी द प्रेम के समर्थक एवं प्रसारक आनंद को अंतत: प्रेम का एक घूँट पिलाए बिना नहीं छोड़ते। ाँ भर में तर्क-वितर्क उपस्थित करता हुआ, स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक आनंद नाटक के अंत में ता के एकनिष्ठ प्रेम में बंध जाता है। अत: स्पष्ट है की विवेच्य दोनों कृतियों में प्रसाद जी का प्रेम ाण एक ही दार्शनिक स्त्रोत को उजागर करता है अपितु 'एक घूँट ' अपेक्षा 'कामायनी' उसका ा दिव्य और अलौकिक है।

हृदय और बुद्धि पक्ष का संघर्ष एवं समन्वय दोनों कृतियों में दृष्टिगोचर होता है। 'एक घूँट' में ा बुद्धि पक्ष तथा प्रेमलता और वनलता हृदय पक्ष के प्रतीक रूप हैं। " देखूँ विजय किसकी होती मस्तिष्क' विजयी होता है कि हृदय....?" [३] वनलता के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि प्रसाद ा 'एक घूँट ' में हृदय और बुद्धि पक्ष के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। नाटक के अंत में आनंद को ता के एकनिष्ठ प्रेम में बांधकर प्रसाद जी ने हृदय की मस्तिष्क पर विजय का चित्रण किया है। ा ओर 'कामायनी ' में इड़ा और श्रद्धा क्रमश: बुद्धि और हृदय पक्ष के प्रतीक रूप हैं। 'कामायनी हृदय की मस्तिष्क पर विजय के साथ-साथ यह विश्वास परिपक्व हो जाता है- " बुद्धिवाद के स में अधिक सुख की खोज में दु:ख मिलना स्वाभाविक है।" [४]

---

१. जयशंकर प्रसाद - 'एक घूँट' - पृष्ठ २०

२. डॉ. गोविंद चातक- 'प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना'- पृष्ठ १०८

३. जयशंकर प्रसाद - 'एक घूँट' - पृष्ठ २१

४ जयशंकर प्रसाद - 'कामायनी ' - आमुख -पृष्ठ ७

ंक्षेप में दोनों कृतियों में हृदय की बुद्धि पर विजय दिखाई गई है। अस्तु 'कामायनी' में इसके रेक्त प्रसाद जी ने बुद्धि पक्ष हो महत्व देकर वास्तविक जीवन की अनुभूति का चित्रण किया है।

'कामना' और 'एक घूँट' : 'कामायनी' की पूर्वपीठिका-

उपयुक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक रचना का दूसरी रचना के साथ संबंध इस विवेचन के आधार पर तीनों रचनाओं में निम्नलिखित सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन का प्रयास किया है।

१ रचनाकाल-

रचनाकाल की दृष्टि से तीनों रचनाओं में बहुत बड़ा अंतर नहीं है।'कामना' यद्यपि सन १९२७ काशित हुई रचना है। किंतु उसका सृजन सन १९२३-२४ में बताया जाता है। 'एक घूँट' १९२६ में 'कामायनी' १९३५ में प्रकाशित हुई थी। डॉ. जगदीश गुप्त जी ने लिखा है -" 'अजात शत्रु' २) की रचना के बाद नाटककार (प्रसाद) ने पहली बार जीवन-मृत्यु, सामाजिक समन्वय और I के लिए सामान्य जीवनादर्श की खोज शुरू की। इस खोज का सर्वप्रथम रूप 'कामना' (१९२३) रंतु यह खोज बहुत गंभीर नहीं है। इसीलिए प्रसाद ने इस खोज को और गहराई दी। १९२८ के ग 'त्यागभूमि' (मासिक-पत्रिका, अजमेर) में 'कामायनी' के पहले सर्गों के कुछ अंश प्रकाशित हुए ससे यह पता चलता है कि कदाचित 'कामना' की रचना के कुछ बाद ही कवि ने 'कामायनी' का न आरंभ किया।" [१] इसके अतिरिक्त 'कामायनी' चिंता सर्ग 'सुधा' (मासिक पत्रिक, लखनऊ) में . में प्रकाशित होने के संदर्भ प्राप्त होते हैं। [२] इससे स्पष्ट होता है कि 'कामायनी' का श्रीगणेश से पूर्व हो चुका था।

'कामना' प्रसाद की मौलिक रचना है। 'कामना' में अपने पूर्ववर्ती कृतियों की संवेदना का क्षीण स मिलता हैं। विचारधारा की दृष्टि से 'कामना', 'एक घूँट' और 'कामायनी' के अधिक निकट पड़ती हैं। डॉ. चातक जी के मतानुसार-" 'कामायनी' प्रसाद जी की अंतिम उपलब्धि है तथा ना' और 'एक घूँट' उसके दो प्रमुख विराम-स्थल है।" [३] डॉ. चातक जी के इस कथन से यह हो जाता है कि प्रसाद के 'कामायनी' सृजन की पृष्ठभूमि 'कामना' में देखी जा सकती है। घूँट' में 'कामायनी' के दार्शनिक विचारों की पूर्णता का अनुभव किया जाता है। इस दृष्टि से ना' और 'एक घूँट' को 'कामायनी' की भूमिका कहा जा सकता है।

· प्रतीकात्मकता:-

'कामना' के पूर्व प्रसाद जी ने ऐतिहासिक नाटकों की ही सृष्टि की है। में उन्होंने 'कामना' में सर्व प्रथम प्रतीकों की योजना की है। उन्होंने 'कामना' के अतिरिक्त 'एक घूँट' और

डॉ. कृष्णदेव प्रसाद गौड़- 'प्रसाद का साहित्य'- पृष्ठ १४०(से उद्धृत)

गोविंद चातक- 'प्रसाद के नाटक संरचना और स्वरूप' - पृष्ठ १०७

ो -पृष्ठ १०७

ायनी' में भी प्रतीकों की सफल योजना की है। अपितु प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में भी युगीन स्थितियों का प्रभाव देखा जा सकता है।

'कामना' में चित्रित पात्र मानव-मनोवृत्तियों के प्रतीक हैं। इसका विस्तृत विवेचन दूसरे अध्याय किया है। डॉ. बच्चन सिंह जी ने लिखा है- " अन्योपदेशिक नाटकों के पात्रों में मानवीय मांसलता अत्यंत क्षीण दिखाई पड़ती है। फिर भी कामना,विलास,लीला,संतोष, विवेक ('कामना' नाटक के) का जो कुछ व्यक्तित्व प्रदान किया गया है। वह मानवीय यथार्थता का स्पर्श करता हुआ प्रतीत है ।"[१]

मना' में चित्रित फूलों के द्वीपवासियों के जीवन के माध्यम से प्राकृतिक जीवन की अभिव्यंजना है। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाले द्वीपवासी स्वर्ण तथा मदिरा के मोह में फँसकर पथभ्रष्ट हो हैं। फलस्वरूप द्वीपवासियों का नैतिक पतन होता है।

डॉ. परमश्वरीलाल गुप्त जी ने अपनी पुस्तक 'प्रसाद के नाटक' में 'कामना' को हमारी ीनता की कथा प्रस्तुत करनेवाला प्रतीकात्मक नाटक कहा है। उनके मतानुसार - "विलास अंग्रेज़ी का प्रतीक है। विलास का समुद्र के वक्ष पर नाव में आना व्यापारी अंग्रेज़-जाति के समुद्र पार कर की व्यंजना करता है। इसी प्रकार स्वर्ण और मदिरा का प्रचार और परस्पर की फुट जो नाटक में ाई गयी है, वह भी अंग्रेजी दुर्नीति की द्योतक है।"[२]इस दृष्टि से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता क नाटक में विलास केवल एक मानव-मनोवृत्ति का प्रतीत न होकर वह पाश्चत्य भौतिकवादी प्रवृत्ति तीक भी है।

'कामना' में एक ओर विलास जो अंग्रेज़ों की भाँति शासक बनना चाहता है और अपनी कांक्षा हेतु दुर्नीति का प्रयोग करता है। तो दूसरी ओर स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करनेवाला, मा गांधी जी के मानवतावादी विचारों से प्रभावित युवक विवेक है। विवेक के मानवतावादी विचारों ारण ही द्वीपवासी पुन: प्राकृतिक जीवन की ओर लौट आते हैं। ' कामना' के कथ्य को देखते ऐस प्रतीत होता है कि विवेक के विचार भारतीय संस्कृति के द्योतक हैं। अत: हम कह सकते हैं विवेक भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

' कामना' में चित्रित मुख्य पात्र ही नहीं अपितु गौण पात्र-क्रूर, दुर्वृत्त,प्रमदा और दंभ आदि भी त्मक पात्र है।डॉ. बच्चन सिंह जी लिखते हैं-"दंभ,संस्कृति और सभ्यता के संबंध में शोर नेवाले महापुरूषों का प्रतीक है,तो दुर्वृत्त व्यवस्था देनेवाले व्यवस्थापकों का प्रमदा आज की सभ्यता ली नारी का प्रतीक है।"[३] अत: स्पष्ट है कि ' कामना' में प्रतीकात्मकता की सृष्टि करने प्रसाद को सफलता मिली है।

डॉ. बच्चन सिंह- 'हिंदी नाटक' -पृष्ठ १७८

डॉ.शांतिस्वरुप गुप्त- 'प्रसाद के नाटक एवं नाटयशिल्प' -पृष्ठ ४१(से उद्धृत)

डॉ.बच्चन सिंह- 'हिंदी नाटक' -पृष्ठ १७८

'एक घूँट'अन्योपदेशिक प्रतीकात्मक एकांकी नाटक है। 'एक घूँट'में चित्रित अरुणाचल के
ा आश्रम की सृष्टि तथा वहाँ के जीवन के आर्दश वाक्य-स्वास्थ्य,सौंदर्य और सरलता आदि -
तेक जीवन की अभिव्यंजना करते हैं।आश्रम में चित्रित-रसाल,कुंज,वनलता आदि पात्रों के
म से प्रकृति के विभिन्न रूपों का मानवीकरण किया गया है। आश्रम में अतिथि बनकर आया हुआ
द्र स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक एवं प्रचारक है। वह बंधन युक्त प्रेम को विश्व-विकास में आनेवाली
मानता है। साथ ही वह दु:ख का अस्तित्व ही-नहीं मानता । आनंद के विचारों के आधार पर
स्पष्ट हो जाता है कि 'एक घूँट' में चित्रित आनंद पाश्चात्य स्वछंदतावादी प्रवृत्ति का प्रतीक है।
घूँट' में चित्रित पुरूष पात्र-बुद्धि पक्ष और स्त्री पात्र हृदय पक्ष को प्रस्तुत करते हैं। नाटक में
त चँदुला भारतीय नाट्यविधान के समान विदूषक का प्रतीक है। वह केवल हास्यविनोद करनेवाला
न होकर निम्मवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। दूसरी और झाड़ूवाल और स्त्री के माध्यम
ारिवारिक जीवन के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। वस्तुत: झाड़ूवाला और स्त्री मध्यमवर्ग का
नेधित्व करनेवाला पात्र है। संबंध नें डॉ. मल्होत्रा जी लिखते हैं -" नाटक में प्रतीकों द्वारा ही
वातावरण और परिस्थिति की संयोजन की गई है तथा आरंभ में मुक्त प्रण्य एवं वैवाहिक प्रणय
ौतुकपूर्ण संघर्ष दिखाते हुए अंत में एक स्वस्थ जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया गया है।" [१] अत:
: है कि 'एक घूँट' दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत करनेवाला प्रतीक नाटक है।

दूसरी ओर 'कामायनी' के आमुख में स्वयं प्रसाद जी ने लिखा है - "यह (कामायनी का)
यान इतना प्राचीन है कि इतिहास के साथ रूपक का भी अद्भूत मिश्रण हो गया है। इसीलिए मनु,
ा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें
झे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष हृदय और मास्तिक क संबंध क्रमश: श्रद्धा
इड़ा से भी सरलता से लग जाता है।" [२] स्पष्ट है कि 'कामायनी' की कथा ' कामना' और 'एक
की भाँति संकेतार्थ गर्भित या प्रतीकात्मक है।

डॉ. नामवर सिंह जी अपने ' कामायनी के प्रतीक ' इस निबंध में लिखते हैं- " 'कामायनी'
नु, श्रद्धा, इड़ा, काम, मानव आदि चरित्र तो प्रतीकात्मक हैं ही । देव सन्यता, सारस्वत नगर,
लय, कैलास, प्रलय, संघर्ष आदि भी प्रतीकवत् प्रयुक्त हुए हैं। इन मुख्य प्रतीकों के अतिरिक्त
-मोटे दर्जनों प्रतीक हैं।" [३] 'कामायनी' में 'हिमालय' -मानव शरीर का प्रतीक है, जहाँ पहले मनु
त मन भटकता रहता है और अंत में त्रिपुरा दर्शन एवं अखंड़ आनंद प्राप्त कर, चिरशांति हासिल
ा है। मनु अर्थात मानव-मन चंचलता,अहंमन्यता,चिंता,निराशा,संकल्प-विकल्प आदि वृत्तियों से
भूत जीव का प्रतीक है। श्रद्धा हृदय का प्रतीक है। दया, सहानभुति, ममता, त्याग, क्षमा, उत्साह,
ा आदि उसके मूल तत्व हैं। इड़ा भौतिकता और बौद्धिकता का प्रतीक है।

डॉ. सुषमा पाल मल्होत्रा - ' प्रसाद के नाटक तथा रंगमंच ' -पृष्ठ १०७
यशंकर प्रसाद- ' कामायनी ' - आमुख-पृष्ठ व viii
डॉ. नामवर सिंह- ' इतिहास और आलोचना' - पृष्ठ ११४

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

डॉ.नामवर सिंह जी लिखते हैं -" 'कामायनी' में चित्रित देव सभ्यता का ध्वंस वस्तुत:हिंदु ओं तथा मुसलमान नबाब तथा मुगल बादशाहों के ध्वंस का पतीक हैं।" [१] जल-प्रलय प्राकृतिक का, हिम-संसृति प्रचीन जड़ता का, उषा- नवजागरण का तथा वनस्पतियाँ समाज की शक्तियों का ञ है। तो डॉ. भगीरथ मिश्र लिखते हैं- "जलप्लावन की घटना भौतिक विलासिता एवं सुख साधन ोग की अतिरेक अवस्था के परिणाम में उपस्थित प्रवृत्ति का प्रकोप या सर्वनाश है।" [२] इसके रेक्त उन्होंने पशु का मर जाना और मारा जाना, तकली कातना को स्वदेशी-देशी आंदोलन का ञ माना है। मनु का सारस्वत देशनिवासियों के साथ युद्ध यांत्रिक सभ्यता के विकास में संघर्ष ्रतीक, शिव का तांड़व सृष्टि के आदिम विकास का प्रतीक और कर्मलोक आज के भागदौड़वाले का प्रतीक माना है। [३] अत: स्पष्ट है कि 'कामायनी' का कथानक ऐतिहासिक मानव-सभ्यता के स का प्रतीक है, केवल एक प्राचीन कथानक नहीं ।समग्र रूप से विचार करने पर यह स्पष्ट हो - है कि 'कामायनी' प्रसाद की अंतिम प्रतीकात्मक रचना है और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति की शैली मना' और 'एक घूँट' में द्रष्टिगोचर होती है।

.३ प्रेम - निरूपण:-

साहित्य का सबसे प्रसिद्ध तथा प्राचीतम विषय है- प्रेम। वेदों से लेकर आज तक के साहित्य म का चित्रण होता रहा है । जयशंकर प्रसाद प्रेम के कवि हैं । उनके साहित्य में प्रेम का संदेश उन्होंने प्रेम के प्रत्येक पहलू को अपनी रचनाओं में उजागर किया है। विवेच्य रचनाओं में प्रेम की व्यक्ति को लेकर निम्नानुसार विवेचन किया जा सकता है।

' कामना' में स्वच्छंद और एकनिष्ठ प्रेम के अतिरिक्त ; राष्ट्र -प्रेम, पारिवारिक प्रेम का चित्रण ुआ है। प्रतीकात्मक दृष्टि से 'कामना' में कामना, संतोष और विवेक एकनिष्ठ प्रेम के प्रतीक हैं। वेलास, लालसा आदि स्वच्छंद प्रेम के प्रतीक हैं।प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के तीसरे अध्याय में प्रेम ्यक समस्याओं के अंतर्गत 'कामना' में चित्रित स्वच्छंद प्रेम तथा एकनिष्ठ प्रेम का विस्तृत विवेचन कर चुके हैं। अत: उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त कामना में व्यष्टि प्रेम ष के माध्यम से, तो पारिवारिक प्रेम-विनोद, लीला के माध्यम से, तो राष्ट्र प्रेम- विवेक और करूणा ाध्यम से प्रस्तुत किया गया है। 'कामना' में माता-पिता और पुत्र के वार्तालाप मातृ-प्रेम, पुत्र प्रेम के च को स्पष्ट करते हैं। प्रेम की उदात्ता को संतोष के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

दूसरी ओर 'एक घूँट'में प्रमुख रूप से 'स्वच्छंद प्रेम' और एकनिष्ठ प्रेम का संघर्ष चित्रित है। बनवारीलाल हांडा जी ने लिखा हैं-" 'एक घूँट' वास्तव में विचारप्रधान एवं बौद्धिक कृति है। इस ा में प्रसाद जी ने एक समस्या उठाई है। स्वच्छंद रूप से

डॉ. नामवर सिंह -' इतिहास और आलोचना'-पृष्ठ ११५-११६

डॉ. भगीरथ मिश्र- कला, साहित्य और समीक्षा- पृष्ठ ३२७

वही-पृष्ठ ३२९

क व्यक्ति से प्रेम किया गया जाना चाहिए या किसी एक व्यक्ति से। दूसरे शब्दो में स्वछंद प्रेम न का लक्ष्य है अथवा व्यक्ति विशेष से संबंधित प्रेम भाव ? इसी समस्या को आधार बनाकर 'एक की रचना की गई है।" [१] प्रस्तुत शोध प्रबंध के तीसरे अध्याय में 'एक घूँट'में चित्रित स्वच्छंद और नेष्ठ प्रेम का विस्तृत विवेचन किया गया है। 'एक घूँट'में चित्रित आनंद का स्वच्छंद प्रेम का क है। तो वनलता और प्रेमलता एकनिष्ठ प्रेम के प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त नाटक में रसाल, ा, झाड़ूवाला और उसकी स्त्री आदि के माध्यम से पारिवारिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। नाटक नलता के माध्यम से उदात्त प्रेम को पाठकों के सामने रखा गया है। 'प्रेम' के अन्य विभिन्न पक्षों का घूँट'में प्रायःअभाव है।

'कामायनी' में लौकिक एवं अलौकिक प्रेम की व्यंजना हुई है। डॉ. रामलाल सिंह जी लिखते 'कामायनी' का सात्विक प्रेम महाकाव्य में उसके व्यष्टि प्रेम, पारिवारिक प्रेम तथा विश्वप्रेम के रूप खाई देता है।" [२] 'कामायनी' में श्रद्धा एकनिष्ठ प्रेम की मुर्ति है, तो मनु स्वच्छंद प्रेम के पुजारी। ा और मनु के माध्यम से पारिवारिक प्रेम, तो मानव और श्रद्धा के माध्यम से वात्सल्य प्रेम की व्यक्ति हुई है। मनु के प्रेम का वासनाजन्य रूप दो स्थानों पर चित्रित है एक गर्भस्त श्रद्धा के प्रति भाव में, दूसरा इड़ा के प्रति आसक्ति के प्रसंग में। अतः मनु को कामुक प्रेमी भी कहा जा ता है। 'कामना' और 'एक घूँट'की भाँति कामायनी में भी प्रेम के संयोग पक्ष के साथ-साथ ग पक्ष का भी निरुपण हुआ है। 'कामना' में विधवा लालसा और लालसा का विलास के साथ ह करने के पश्चात कामना में भी प्रेम के वियोग पक्ष को देखा जा सकता है। 'एक घूँट'में पति प्रेम ाभाव के कारण के चरित्र में विरहिणी का भाव दिखाई देता है। 'कामायनी' में श्रद्धा के विरह का वर्णन है। मनु जब गर्भस्त श्रद्धा को अकेला छोड़कर चले जाते हैं तब विरहिणी श्रद्धा मलिन पर पड़ी रहती है और आँसू बहाते रहती है। उसे एक घड़ी भी विश्राम नहीं है। यह भावार्थ ायनी' के निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है-

'कामायनी- कुसुम बसुधा पर पड़ी, न वह मकरंद रहा,
क चित्र बस रेखाओं का , अब उसमें हैं रंग कहाँ !
X X X X X X X X X X X X
ील गगन में उड़ती-उड़ती विहंग- बालिका सी किरनें,
स्वप्न- लोक को चलीं थकी-सी नींद- सेज पर जा गिरने।
केंतु, विरहिणी के जीवन में एक घड़ी विश्राम नहीं -" [३]

---

१. डॉ. बनवारीलाल हांड़ा - 'प्रसाद का नाट्यशिल्प' - पृष्ठ-१८०
२. डॉ. रामलाल सिंह- 'कामायनी अनुशीलन' - पृष्ठ-१७६
३. जयशंकर प्रसाद- 'कामायनी' - स्वप्न सर्ग- पृष्ठ ६१

ामना ' 'एक घूँट'और 'कामायनी' में चित्रित प्रेम के संबंध में डॉ. गोविंद जी लिखते हैं-" प्रेम को ाद ने उस प्रबल शक्ति के रूप में स्वीकार किया है, जो आनंद की अनुभूति कराती है। प्रेम हृद्य ा का सत्य व्यक्त करता है और बुद्धि संशय में ड़ालती है। इसलिए प्रसाद ने इन कृतियों में हृद्य बुद्धि का संघर्ष दिखाया है और अंततः प्रेम को पूर्ण काम तथा मंगलमय सिद्ध कर उसके साथ ंद की भी प्रतिष्ठा की है।" [१] अंत: स्पष्ट है की प्रेम संबंधी चिंतन में तीनों कृतियों में पर्याप्त साम्य है। किंतु 'कामना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी' में प्रेम की विस्तृत व्यजना हुई है।

४ शैवदर्शन और आनंदवाद-

संसार में प्रत्येक प्राणी सुख की इच्छा करता है। सुख को प्राप्त करने के लिए वह भयंकर नाओं को, दुखों को वहन करने की क्षमता रखता है। मानव-सुख दो प्रकार का होता है- एक रिक दूसरा मानसिक। शारीरिक सुख को प्राय: वास्तव सुख की संज्ञा दी जाती है और मानसिक आनंद में निहित माना जाता है। यह आनंद मानव जीवन का चरम लक्ष्य होता है। जयशंकर द आनंदवाद के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने शैवों के आनंदवाद की प्रतिष्ठा अपने साहित्य में की है। विमलकुमार जैन जी ने लिखा है- "प्रसाद जी शैवागमों से पर्याप्त प्रभावित थे और शैवागमों में दवाद की बड़ी सदृढ़ स्थापना हुई है।" [२]

'कामना' और 'एक घूँट' के साथ-साथ 'कामायनी' में भी प्रसाद जी ने आत्मा की आनंदमयी ा को ही चिंतन का आधार बनाया है। फलप्राप्ती की दृष्टि से विवेच्य तीनों कृतियों में आनंदवादी ा की अभिव्यंजना करने में प्रसाद जी को सफलता मिली है।'कामना'में प्राकृतिक जीवन की सृष्टि, 'एक घूँट' में आनंद को आनंद रस की एक घूँट पिलाकर और 'कामायनी' में सामरस्य की ब्धी आनंदवाद को व्यंजित करते हैं।

रामचंद्र शुक्ल जी ने 'कामायनी' का उद्देश्य केवल शैवों के आनंदवाद की प्रतिष्ठा माना है।[३] तो गिरथ मिश्र जी लिखते हैं -" 'कामायनी' का संदेश संघर्ष और द्वंद्व से छिन्न-भिन्न मानव को रस्य के आनंद में मग्न करने का मार्ग बताया गया है।"[४] संक्षेप में 'कामायनी' में प्रसाद जी ने शैव ा के आनंदवाद का प्रतिपादन किया है। डॉ. चातक जी ने लिखा है - " शैव दर्शन के अनुसार य के समस्त बंधनों का कारण उसका अज्ञान है। इसके कारण मानव-शरीर को ही अपना स्वरुप लेता है। चिति------- परमार्थिक सत्ता---- जीव को विषय और संसार से अनुरक्त रखती है और उसी की लीला है।"[५] 'कामायनी' की ही भाँती 'एक घूँट' और 'कामना' में भी प्रसाद जी ने विश्व चेति की आनंद-क्रीड़ा के रूप में स्वीकार किया है। तथा विश्व को 'खेल'के रूप में देखने से

---

१. डॉ. गोविंद चातक- 'प्रसाद के नाटक स्वरूप और संरचना' - पृष्ठ ११४.

२. डॉ. विमलकुमार जैन- 'कामायनी चिंतन' - पृष्ठ ३१३

३. आ. रामचंद्र शुक्ल - 'हिंदी साहित्य का इतिहास' - पृष्ठ ६९०

४. डॉ. भगीरथ मिश्र - 'कला, साहित्य और समिक्षा' - पृष्ठ ३२९

५.डॉ. गोविंद चातक- प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना- पृष्ठ ११३

MAH. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

ाव आनंद-क्रीड़ा करते हैं, इस बात का संकेत दिया गया है। 'कामना' में अकेला 'खेल' शब्द से अधिक बार इसी दार्शनिक पृष्ठभूमि में प्रयुक्त हुआ है।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन शैवों का प्रमुख दर्शन है और भारतीय दर्शनों में उसका विशिष्ट स्थान है। यकृष्णदास जी लिखते हैं- "प्रसाद जी के परिवार की दार्शनिक विचारधारा प्रत्यभिज्ञा दर्शन की में थी, क्योंकि ये लोग शैव दर्शनों में से काश्मीर के प्रत्यभिज्ञा दर्शन को ही अत्यंत पुष्ट और मानते थे। [हिमालय(दिपावली अंक) सं २००३, पृष्ठ-६]" [१] प्रत्यभिज्ञा-दर्शन के अनुसार परम की अवस्था में अंतरंग सरल और शुचि हो जाता है और बहिरंग स्वस्थ और सुंदर।[२] यह दर्शन तीनों कृतियों में दृष्टिगोचर होता है।

'एक घूँट' में चित्रित 'आनंद' स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक एवं घुम्मकड़ युव्क है। वह सिद्धांत: के आनंदवाद का प्रतिनिधित्व करता है। वह सृष्टि का मूल रहस्य 'आनंद' ही मानता है। वह है- " आनंद का अंतरंग सरलता है और बहिरंग सौंदर्य है, इसी में वह स्वस्थ रहता है।"[३]

अर्थात मनुष्य जीवन की सरलता और सुंदरता आनंद में अंतर्निहित है। 'कामायनी ' के अंत में ो शिव तांड़व नृत्य और त्रिपुरा दर्शन से जीवन का रहस्य ज्ञात होता है। 'कामायनी' में प्रसाद लिखा है- " प्रतिफलित हुई सब आँखें उस प्रेम-ज्योति विमला से,

---

१.डॉ. चक्रवर्ती - प्रसाद की दार्शनिक चेतना- पृष्ठ ३८ (से उद्धृत)

२.वही- पृष्ठ ३६७

३.जयशंकर प्रसाद - 'एक घूँट'- पृष्ठ १९

सब पहचाने- से लगते अपनी ही एक कला से।
समरस थे जड़ या चेतन सुंदर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती आनंद अखंड़ घना था।" [१]

वस्तुत:यह वस्तुत:यह अनुभूति सामरस्य की है जिसमें मनुष्य सारे भेदों विषमताओं से उपर जाता है और उसे अखंड़ आनंद प्राप्त होता है। डॉ. चक्रवर्ती जी के मतानुसार- कामायनी' में प्रतिपादित अखंड़ आनंद की चिर-मंगलमयी अवस्था वर्णन है कि 'प्रेम' 'आनंद' के सम्मिलन से अखंड़ आनंद का सृजन होता है।"[२] 'कामना' में संतोष के कुछ शब्दों में ानंदवाद का स्वर मुखरित हुआ है- " आनंद के लिए सब कुछ किया, पर वह कहाँ ! जब मन में ं नहीं, तब कहीं नहीं।"[३] दूसरी ओर 'एक घूँट' में आनंद द्वारा कहलाया गया है- "विश्व सपूर्ण है ; है न ? तब विश्व की कामना का मूल रहस्य 'आनंद' ही है, अन्यथा वह 'विकास' न ं दूसरा ही कुछ होता।"[४] स्पष्ट है कि 'एक घूँट' का प्रमुख प्रतिपाद्य है- प्रेम रस की 'एक घूँट' और पीलाना आनंद और मांगल्य की सृष्टि करता है। आनंद और मांगल्य का यह भाव 'कामना' 'कामायनी' में दिखाई देता है। संक्षेप में विवेच्य तीनों कृतियों में जीवन का मूल्य रहस्य आनंद को गर किया गया है।

डॉ. चक्रवर्ती जी लिखते हैं - " शैवों के अद्वैतमूलक आनंदवाद और बौद्धों की करूणा पर ने (प्रसाद जी ने)जिस तरह समन्वित रूप से बल दिया, उस तरह 'एक घूँट' के पूर्ण की ाओं में नहीं दिया।" [५] इससे स्पष्ट होता है कि शैवदर्शन संबंधी गहन अध्ययन में प्रसाद की तमूलक आनंदवाद में गहरी आस्था हो गई थी जिसका पूर्ण रूप से विकास आगे चलकर ायनी' में हुआ। इस दृष्टि से 'कामना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी' प्रौढ़ रचना है।

५ नियतिवाद का चित्रण

नियति के व्युत्पत्ति मूलक अर्थ के परिप्रेक्ष्य में डॉ. पद्माकर शर्मा जी लिखते हैं - " आत्मा की मेका शक्ति नियति है।"[६] नियति के प्रवृत्ति निमित्त अर्थ को लक्ष्य में

१.जयशंकर प्रसाद - कामायनी - आनंद सर्ग - पृष्ठ ११४
२ डॉ. चक्रवर्ती - 'प्रसाद की दार्शनिक चेतना' - पृष्ठ ३६८
३ जयशंकर प्रसाद - 'कामना' - दूसरा अंक, चौथा दृश्य - पृष्ठ ४५
४ जयशंकर प्रसाद - 'एक घूँट' - पृष्ठ २१
५ डॉ. चक्रवर्ती - 'प्रसाद की दार्शनिक चेतना' - पृष्ठ ३६५-६६
६ डॉ. पद्माकर शर्मा - 'प्रसाद के नाटकों में नियतिवाद' - पृष्ठ ९

हुए उन्होंने लिखा है-" 'नियति का प्रयोग भाग्य, देव, अदृश्य, विधि, भवितव्यता, दैष्टिकता, , कर्म और ईश्वरेच्छा के पर्याय के रूप में भी होता रहा है।"[१] वस्तुत: यह स्वाभाविक है कि जब ओर से यातनाएँ घेर लेती हैं तो व्यक्ति भाग्योन्मुख हो जाता है क्योंकि भाग्योन्मुख होने के कारण केसी सीमा तक आत्मसंतोष मिलता है। प्रसाद के नियति संबंधी विचारों का मूल स्त्रोत उनका क दु:खमय जीवन है। प्रसाद की रचनाओं में अभिव्यंजित नियतिवादी विचारों के संबंध में डॉ. जी लिखते हैं - घोर नियतिवादी प्रसाद ने अपने जीवन में जिस नियतिवाद का विवेचन-विश्लेषन है, प्रथम तो वह निरा भाग्यवाद नहीं है और यदि है भी तो वह निराशावाद को जन्म नहीं अपितु सदैव कर्मशीलता की ओर उन्मुख होने की महत प्रेरणा देता है।"[२] प्रसाद की विवेच्य ओं में यही चरितार्थ है।

'कामना' में चित्रित द्वीपवासियों का पंच्छियों द्वारा पिता का संदेश सुनना इस बात को स्पष्ट है कि वे पिता रूपी अलौलिक सत्ता में विश्वास रखते थे। वे स्वयं को तार की संतान मानते थे खेल खेलने द्वीप में आये हैं इस बात पर उन्हें विश्वास था। 'कामना' में चित्रित विलास की यह है कि उसका पुरूषार्थ किस काम का है, यदि वह ऐसी भोली-भाली जाति पर अपना शासन त नहीं कर सका। विलास जहाँ पुरूषार्थ की बात करता है, वहीं यह जानकर कि आजकल ना गृह का नेतृत्व कामना के हाथ में है, अपने भाग्य को स्मरण करता है - " भाग्य से आजकल ा ही (प्रधान) है। परंतु मेरे कारण शीघ्र इसको पद से हटना होगा।"[३] यहाँ विलास की भाग्य और र्थ परक दोनों मन:स्थितियों का चित्रण हुआ है। दूसरी ओर ईश्वर संबंधी अपने विचारों को प्रकट हुए कहता है- "ईश्वर है और वह सब के कर्म देखता है। अच्छे कार्यों का पारितोषिक और बुर का दंड देता है। वह न्याय करता है ; अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा।"[४] यहाँ विलास जैसा ववादी पात्र भी कर्मफल की चर्चा करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। विवेक जब पाप और पुण्य षय में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करता है तब विलास उसे समझाता है कि दूसरों की सहायता ही पुण्य है और किसी को कष्ट देना ही पाप। विलास के इन विचारों को भी हम कर्मवाद की दे सकते हैं और कर्मवाद वस्तुत: नियतिवाद का पर्याय है।

'कामना' में दूसरे अंक के छठे और तीसरे दृश्य में लालसा और कामना द्वारा क्रमश: य'और 'कर्म-फल' शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त तीसरे अंक के पाँचवे दृश्य में एक अपने पति को फटकारते हुए 'भाग्य' शब्द का प्रयोग

डॉ. पद्माकर शर्मा - 'प्रसाद के नाटकों में नियतिवाद' - पृष्ठ १२३

वही- पृष्ठ १२३

जयशंकर प्रसाद - कामना - पहला अंक, तीसरा दृश्य - पृष्ठ १७

जयशंकर प्रसाद - कामना - पहला अंक पाँचवा दृश्य - पृष्ठ २६

ाल की भाषा में करती है।

'एक घूँट' में आनंद झाड़ूवाला तथा वनलता आदि पात्रों के संवाद में नियति-विषयक सदर्भों को जा सकता है। स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक आनंदवादी आनंद दु:ख का अस्तित्व ही नहीं मानता। न दार्शनिकों से मतभेद रखता है जो संसार को दु:खमय मानते है और दु:ख के नाश का उपाय ा पुरूषार्थ मानते हैं। वह कहता है- " यह जो दु:खवाद का पचड़ा सब धर्मों ने, दार्शनिकों ने है उसका रहस्य क्या है? डर उत्पन्न करना ! विभीषिका फैलाना।"[१] दूसरी ओर वनलता दु:ख का त्व

र करती हुई कहती है -" मुझे तो यही दिखाई देता है कि सब दु:खी हैं; सब विकल हैं, सबको क घूँट की प्यास बनी है।" [२] उसी प्रकार झाड़ूवाला अपने वैवाहिक जीवन की असफलताएँ घर्षों के कारण दैववादी बन गया है। अपनी स्त्री के कहने पर वह आश्रम में आया है। वह है-

धाता ने मेरे जीवन को नए चक्कर में जुतने का संकेत किया। मैंने सोचा कि चलो इसी आश्रम झाड़ू लगाकर महीने में पंद्रह रूपये ले लूँगा और श्रीमतीजी सरलता का पाठ पढ़ेंगी।" [३] झाड़ूवाले ा कथन से यह स्पष्ट होता है कि उसे 'विधाता' के प्रति आस्था है। विवेचित संदर्भों के अतिरिक्त घूँट' में नियति विषयक संदर्भों का प्राय: अभाव है। अत: स्पष्ट होता है की 'एक घूँट' नियति ं अभिव्यक्ति की दृष्टि से गौण होते हुए भी उसमें एक दो स्थलों पर कर्म की ध्वनि सुनाई है।

दूसरी ओर 'कामायनी' में प्रसाद की नियति का स्वरूप उदात्त तथा निर्वैयक्तिक हो गया है। यनी' में नियति एक अज्ञात तथा अलौकिक वास्तविकता के रूप में दिखाई पड़ती है। प्रसाद जी ानुसार कर्म पथ नियति द्वारा पहले से सुनिश्चित हैं। विश्व के सब प्रकार के कर्मचक्रों को ाली नियति है-

"नियति चलाती कर्म चक्र यह तृष्णा-जनित ममत्व-वासना

पाणि-पादमय पंचभूत की यहाँ हो रही उपासना। " [४]

काम क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि ममत्वमयी वासओं से संबंध रखने वाले कार्य नियति की ही से हो रहे हैं। संसार में सभी लोग किसी न किसी इच्छा के संपादन के लिए व्याकुल दिखाई वस्तुत: यह भी नियति की ही प्रेरणा है। 'कामायनी' में यही नियतिवादी दर्शन दृष्टिगोचर होता र्म- चक्र- सा धूम रहा है यह गोलक, बन नियति- प्रेरणा,

---

शंकर प्रसाद - 'एक घूँट' - पृष्ठ ३४

- पृष्ठ ४०

- पृष्ठ ३६

ंकर प्रसाद- 'कामायनी' - रहस्य सर्ग- पृष्ठ १०६

पीछे लगी हुई है कोई व्याकुल नयी एषणा।" [१]

ामायनी' में भाग्य,दैव, कर्म, विधि आदि विभिन्न रूपो में नियतिवाद का चित्रण हुआ है। सुख :ख के समन्वय का चित्रण 'कामायनी' में किया गया है। 'कामायनी' में दु:ख को ईश का माना गया है-

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल ,
ईश का वह रहस्य वरदान,कभी मत इसको जाओ भूल।" [२]

ामायनी' में नियतिवाद का विवेचन करना व्यापक एवं स्वतंत्र अनुसंधान का विषय है। इस दृष्टि मना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी' निसंदेह प्रौढ़ रचना है। संक्षेप में हम कह सकते हैं ाच्य नाटकों में चित्रित नियति की विस्तृत व्याख्या 'कामायनी' में हुई है।

हृद्य और बुद्धि पक्ष का संघर्ष एवं समन्वय: -

तीकात्मक दृष्टि से 'कामना', 'एक घूँट' और ' कामायनी' में हृद्य और बुद्धि पक्ष का संघर्ष ान्वय चित्रित है। 'कामना' में विलास, लालसा, लीला, आदि पात्र बुद्धि पक्ष के प्रतीक हैं, तो संतोष आदि हृद्य पक्ष के। इनके अतिरिक्त द्वीप के उपासना गृह का नेतृत्व करनेवाली बुद्धि पक्ष को लेकर चलती है किंतु अंत में संतोष को साथी बनाकर हृद्य पक्ष को अपनाती :क के अंत में हृद्य की बुद्धि पर विजय दिखाई गई है और द्वीप में पुन:प्राकृतिक जीवन की ी गई है।

'एक घूँट' में चित्रित आनंद सैद्धांतिक रूप में हृद्य तथा बुद्धि पक्ष का समर्थन होते हुए भी बुद्धि पक्ष को लेकर चलता है। डॉ. बनवारीलाल हांडा लिखते हैं - "आनंद के व्यवहारिक की विड़ंबना यही है कि वह जीवन में हृद्य और बुद्धि पक्ष को समन्वित करके नहीं "[३].संभवत: इसी कारण उसका जीवन अस्थिर है। प्रसाद जी ने नाटक के अंत में बुद्धिवादी को वनलता (हृद्य) के एकनिष्ठ प्रेम में बांधकर स्थिरता प्रदान की है। 'एक घँट' में चित्रित के अतिरिक्त रसाल, मुकुल आदि बुद्धि पक्ष तो प्रेमलता, वनलता आदि हृद्य पक्ष को लेकर ं। डॉ. चक्रवर्ती जी के मतानुसार- "'एक घूँट' में पुरूष और स्त्री क्रमश: बुद्धि और हृद्य के स्वरूप उपस्थित किये गये हैं और मानव जीवन की पूर्णता के निमित्त दोनों का सामंजस्य ा किया गया है।"[४]

कर प्रसाद- 'कामायनी' - रहस्य सर्ग- पृष्ठ १०५
शंकर प्रसाद- 'कामायनी' - श्रद्धा सर्ग -पृष्ठ १५
बनवारीलाल हांड़ा - 'प्रसाद का नाट्यशिल्प' - पृष्ठ १८४
चक्रवर्ती - 'प्रसाद की दार्शनिक चेतना' - पृष्ठ ३६६

'कामायनी' में मनु मानव मन का, श्रद्धा-हृदय कातो इड़ा-बुद्धि का प्रतीक है। जल प्रलय के ा चिंतीत मनु को श्रद्धा (हृदय) कर्मपथ पर चलने का संदेश देती है तथा उसकी सहायता भी है। मनु जब गर्भस्त श्रद्धा को छोड़कर सारस्वत प्रदेश में जाता है तब उसके मानसिक द्वंद्वं थति में इड़ा (बुद्धि) उसे बुद्धि विवेक से काम करने का परामर्श देती है। यहाँ मनु बुद्धि पक्ष ाश्रय लेते हैं।

डॉ. नामवर सिंह जी लिखते हैं- " ध्यान देने की बात है कि महाप्रलय के बाद मनु की चिंता आत्मविश्वास से दूर हुई थी। लेकिन इस बार (सारस्वत प्रदेश में पहुँचने पर) की चिंता वेवेक से शमित हुई।"[१] मनु बुद्धि के बल पर सारस्वत प्रदेश का पुनर्निर्माण करते हैं। बुद्धिवाद ावित मनु इड़ा पर अधिकार दिखाने की चेष्टा करते हैं। परिणामतः उन्हें देवगण का कोपभाजन ड़ता है और सारस्वत प्रदेश की जनता के साथ भयंकर युद्ध करना पड़ता है। जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' के 'आमुख' में लिखा है-"इड़ा का बुद्धिवाद श्रद्धा (हृदय) और मनु (मन) के बीच न बनाने में सहायक होता है। फिर बुद्धिवाद के विकास में अधिक सुख की खोज में दुःख स्वाभाविक है।"[२]

जो व्यक्ति अहंवश या व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति हेतु हृदय पक्ष को त्यागकर बुद्धि पक्ष का आश्रय ै वह तर्क को महत्व देता है, अपने आप को सर्वोपरि एवं सर्वोत्कृष्ट समझने लगता है। ाद से प्रभावित व्यक्ति भौतिकवादी हो जाता है और बौद्धिक व्यभिचार भी कर ड़ालता है। तः उन्हें असफलता और नाना-विधि संकटों का सामना करना पड़ता है। अतः मनुष्य को जीवन अखंड़ आनंद प्राप्त करना हो तो उसे हृदय और बुद्धि का समन्वय करना चाहिए। अर्थात् को श्रद्धा पूर्वक बुद्धि से कार्य करना चाहिए। विवेच्य तीनों कृतियों में यही दर्शन चरितार्थ है। साद जी ने 'कामायनी' में बुद्धि के महत्व एवं हृदय के साथ समन्वय के महत्व को स्पष्ट करते खा है-

ह तर्कमयी तू श्रद्धामय,तू मननशील कर कर्म अभय,
ाका तू सब संताप निश्चय,हर ले हो मानव भाग्य उदय।" [३]

क्षेप में विवेच्य तीनों कृतियों के अंत में हृदय पक्ष की विजय का चित्रण हुआ है। किंतु प्रसाद जी ा पक्ष के महत्व के प्रतिपादन के साथ-साथ हृदय और बुद्धि पक्ष के समय से अखंड़ आनंद की ाती है, यह संदेश भी दिया है।

भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति

प्रसाद युग में भारतीय विदेशी सभ्यता के बाह्य एवं क्षणिक आकर्षण में अपनी

डॉ. नामवर सिंह- 'इतिहास और आलोचना' - पृष्ठ ११८
जयशंकर प्रसाद- 'कामायनी' - आमुख- पृष्ठ viii
वही- दर्शन सर्ग- पृष्ठ ९५

ा एवं संस्कृति को भूल रहे थे। ऐसे संक्रांति काल में प्रसाद जैसे महान कलाकार ने कलात्मक अतीत कालीन भारतीय संस्कृति के आदर्शों की स्थापना अपने
प में की है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति विश्व की महान संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। काल से ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित प्रसाद भारतीय संस्कृति के प्रेमी एवं क थे। उनकी किसी भी एक नाट्य-रचना का भारतीय संस्कृति के परिपेक्ष्य में अनुशीलन करना अनुसंधान का विषय हो सकता है। अस्तु अध्याय की सीमाओं के मद्देनजर यहाँ विवेच्य ों में समन्वित रूप से अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति के तत्वों का संक्षीप्त विवेचन किया है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक जीवन को महत्व दिया गया है। विवेच्य रचनाओं में क जीवन का चित्रण हुआ है। 'कामना' में न राज्य था, न राजा, न दंड़ व्यवस्था और न ही दंड़ ा। धर्म से ही प्रजा परस्पर रक्षा करती थी। स्वयं को तारा की संतान माननेवाले द्वीपवासी क जीवन व्यतीत करते थे। 'कामना' में प्राकृतिक जीवन के महत्व को स्पष्ट किया गया है। 'एक अरूणाचल पहाड़ी के समीप एक हरे-भरे प्राकृतिक वन में स्थित स्वास्थ्य निवास- 'अरूणाचल - का चित्रण हुआ है। आश्रमवासियों का आदर्श है- स्वास्थ्य, सौंदर्य और सरलता। दूसरी ओर ानी' में भी मनु और श्रद्धा का प्रारंभिक जीवन तथा अंत मे कैलास की यात्रा का वर्णन भी क जीवन का परिचय है।

भारतीय संस्कृति में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, परिस्थिति में साध्य वस्तु आनंद ही माना गया स्तुत अध्याय में (४.५.४ शैवदर्शन और आनंदवाद) के अंतर्गत विवेच्य कृतियों में चित्रित आनंदवाद स्तृत विवेचन किया है। विवेच्य कृतियों में आत्मा की आनंदमयी प्रेरणा को ही चिंतन का आधार गया है। और सिद्धांतः शैवों के आनंदवाद का प्रतिपादन किया गया है। इसके अतिरिक्त कृतियों में प्रसाद जी ने विश्व को चिति की आनंद क्रीड़ा माना गया है। यह बात दूसरी है कि ान 'कामना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी ' में अधिक प्रौढ़ है।

भारतीय संस्कृति में नारी ही प्रेम का प्रस्ताव प्रथम रखती है। नारी के प्रथम रीझने में ा की भावना अंतर्निहीत है।[२] विवेच्य तीनों रचनाओं में यही दर्शन निर्दिष्ट है। 'कामना' में कामना विलास के सौंदर्य एवं स्वर्णपट्ट पर मुग्ध होकर प्रेम का प्रस्ताव प्रथम रखती है। 'एक आनंद के विचारों से प्रभावित वनलता के हृदय में आनंद के प्रति प्रेम भावना उत्पन्न होती है। ओर 'कामायनी ' में भी श्रद्धा ही मनु के सम्मुख प्रेम का प्रस्ताव रखती है। तीनों कृतियों में रीझने में वासना की गंध नहीं वर्ना भारतीय वीरपूजा की भावना निहीत है।

ामपाल सिंह - 'कामायनी अनुशीलन' - पृष्ठ २०८

- पृष्ठ २०६

अस्तु 'कामायनी' में श्रद्धा के जीवन में नारीत्व का पूर्ण विकास चित्रित है। डॉ. सिंह जी लिखते हैं - " भारतीय संस्कृति की दृष्टि से नारीत्व का चरम विकास मातृत्व में निहीत है। मातृत्व का प्रधान करूणा गुण है- विश्व के प्रति पुत्रवत प्रेम, प्राणिमात्रा के प्रति करूणा की भावना, निर्माण या सर्जन की इच्छा।"[१] यह गुण श्रद्धा के चरित्र में पर्याप्त मात्रा में वर्तमान है। जैसे गर्भस्त श्रद्धा का पशुपालन करना, उन्हे पुत्रवत प्रेम करना, आनेवाले नवजात शिशु की चिंता करना आदि उसके नारीत्व के चरम विकास के प्रतीक हैं। 'कामना' और 'एक घूँट' में नारी का मातृत्व रूप उपेक्षीत है।

भारतीय संस्कृति के पतन का मूल कारण पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति का अंधानुकरण ही है। 'कामना' में चित्रित पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्ति का प्रतीक विलास अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु द्वीप में स्वर्ण तथा मदिरा का प्रचार करता है भोगवादाभिमुख द्वीपवासियों का नैतिक पतन होता है। अस्तु नाटक के अंत में भारतीय संस्कृति के प्रतीक विवेक के माध्यम से प्राकृतिक जीवन की सृष्टि की है। डॉ. जयदेव तनेजा जी ने 'आधुनिक भारतीय रंगपरिदृश्य' इस निबंध में लिखा है -" कामना पश्चिमी भोगवादी भौतिक सभ्यता पर भारतीय अध्यात्मिक जीवन-सृष्टि शैली की विजय का प्रतीक है।"[२] अत: स्पष्ट है कि कामना में प्रसाद जी ने भारतीय अध्यात्मिक संस्कृति को महत्व दिया है। 'एक घूँट' में स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक आनंद पाश्चात्य स्वच्छंदवादी प्रवृत्ति का प्रतीक है। नाटक के अंत में प्रसाद जी ने भौतिकवादी आनंद को प्रेमलता के साथ बांध दिया है। दूसरी ओर 'कामायनी' में इड़ा (बुद्धि) पाश्चात्य भौतिकवाद की प्रतीक है। डॉ. रामलाल सिंह जी लिखते हैं - "मनु जब तक हृदयवादी संस्कृति की प्रतीक श्रद्धा को छोड़कर बुद्धिवादी संस्कृति की प्रतीक इड़ा के मोहपाश में रहता है। तब तक उसका कल्याण नहीं होता।"[३] संक्षेप में प्रसाद जी ने तीनों कृतियों में हृदयवादी भारतीय संस्कृति को महत्व दिया है।

किसी भी देश की संस्कृति में दूसरे देश की संस्कृति के तत्व मिलते रहते हैं। देश-काल परिस्थिति की आवश्यकता अनुसार सभी संस्कृतियों के तत्व, नियम, विधान बदलते रहते है। अपितु उनके मौलिक प्राथमिक तत्व स्थिर रहते हैं। डॉ. सिंह जी लिखते हैं- "दो भिन्न संस्कृतियों का शांतिपूर्ण संम्मिलन या समन्वय दोनों कों व्यापक बनाता है तथा दोनों के अनुयायियों पर कल्याण की वर्षा करता है।"[४] सांस्कृतिक समन्वय की व्यंजना विवेच्य तीनों कृतियों में दृष्टव्य है।

---

१. डॉ. रामलाल सिंह - 'कामायनी अनुशीलन' - पृष्ठ २०६

२. डॉ.सतेंद्रकुमार तनेजा-'नाटककार जयशंकर प्रसाद'-पृष्ठ१४८ (से उद्धृत)

३. डॉ. रामलाल सिंह- 'कामायनी अनुशीलन' - पृष्ठ २०४

४. वही -पृष्ठ २०४

'कामायनी' में बुद्धिवादी विदेशी सभ्यता की प्रतीक इड़ा और आत्मवादी भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानव के मधुरमिलन द्वारा प्रसाद जी ने सांस्कृतिक समन्वय को स्पष्ट किया है। उसी प्रकार 'कामना' में संतोष और कामना के मिलन और 'एक घूँट' में आनंद और प्रेमलता के मिलन द्वारा प्रसाद जी ने सांस्कृतिक समन्वय को उजागर किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रसाद जी पाश्चात्य संस्कृति के विरोधी नहीं थे। उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के समन्वय को मानव कल्याण के रूप में स्वीकार किया था।

४.३.८ काव्य रूप :-

काव्य रूप की दृष्टि से 'कामना' , 'एक घूँट' और 'कामायनी' एक ही कोटि की कृतियाँ हैं। 'कामायनी' स्वयं प्रसाद के शब्दों में 'मानवता का विकास रूपक है।' [१] को भी कई आलोचकों ने अन्योपदेशिक (ऐलिगॉरिकल) नाट्यकृति माना है और जहाँ तक 'कामना' का प्रश्न है वह तो सच्चे अर्थो में प्रतीकात्मक रूप से मानव सभ्यता का प्रागैतिहासिक चित्र प्रस्तुत करता है। जहाँ तक एक कृति का काव्य और अन्य दो कृतियों का नाटक होने का प्रश्न है, विधा का यह भेद भी महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि 'कामायनी' में नाटककार प्रसाद और 'कामना' और 'एक घूँट' में कवि प्रसाद की झाँकी मिलती है। 'कामना' और 'एक घूँट' में क्रमशः नौ और चार गीतों की सृष्टि हुई है तो 'कामायनी' में मनु- श्रद्धा, मनु- इड़ा मानव- श्रद्धा आदि की कथा संवादात्मक है। अतः स्पष्ट है कि 'कामायनी' में नाट्य और 'कामना' अथवा 'एक घूँट' में काव्य का आभाव नहीं है।

४.३.९ 'कामना' और 'एक घूँट' की परिपक्व एवं महाकाव्यात्मक अभिव्यक्ति-'कामायनी'-

'कामना' और 'कामायनी' का तुलनात्मक अध्ययन करते समय (४.३में) हमने देखा है कि कई आलोचकों ने 'कामना' को 'कामायनी' के चिंतन का पूर्व रूप माना है। इसके अतिरिक्त 'एक घूँट' और 'कामायनी' के साम्य-भेद को स्पष्ट करते समय(४.४में) हमने देखा है कि 'एक घूँट' का सृजन प्रसाद जी ने 'कामायनी' से अवकाश निकालकर और प्रत्याभिज्ञा दर्शन से प्रभावित होकर किया है। दूसरी ओर विवेच्य तीनों कृतियों में प्रतीकात्मकता, प्रेम-निरूपण, शैवदर्शन और आनंदवाद, नियतिवाद, हृदय और बुद्धि पक्ष का संघर्ष एवं समन्वय, भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति और काव्य रूप आदि की अभिव्यक्ति हुई है। अपितु विवेच्य दर्शन का चित्रण 'कामना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी' में अधिक प्रौढ़ है। अतः हम कह सकते है कि वैचारिक स्तर पर 'एक घूँट' और 'कामना' की परिपक्व महाकाव्यात्मक अभिव्यक्ति 'कामायनी' में हुई है।

---

१. जयशंकर प्रसाद - 'कामायनी' - आमुख- पृष्ठ v

निष्कर्ष-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ तक 'कामना' के रूपक तत्व का प्रश्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि समाधान के संबंध में प्रसाद पूरी तरह से आश्वस्त न थे। इसलिए उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से एक दार्शनिक विचारधारा को 'कामना' के अतिरिक्त 'एक घूँट'और 'कामायनी' में उठाकर संतोष किया। यद्यपि 'कामायनी' महाकाव्य है और 'कामना' और 'एक घूँट' नाट्य कृतियाँ हैं। अत: विवेच्य नाट्यकृतियों की अपेक्षा महाकाव्य में वैचारिक गंभीरता एवं गहराई आना स्वाभाविक है।

'कामायनी' महाकवि प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है और उस युग की सर्वोत्तम कृति एवं भारतीय चेतना का गौरव ग्रंथ है। दूसरी ओर 'कामना' और 'एक घूँट' दोनों प्रतीकात्मक सैद्धांतिक नाटक हैं जिसे अन्योपदेशिक नाट्क कहा जाता है। इस अध्याय में विवेच्य रचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि 'कामना', 'एक घूँट' और 'कामायनी' में प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष संबंध है।

'कामायनी' प्रसाद जी की अंतिम रचना है और विवेच्य नाटक विचारधारा की दृष्टि से 'कामायनी' के अधिक निकट है। अस्तु , 'कामायनी' सृजन का कार्य 'कामना' के सृजन के कुछ बाद ही आरंभ हो चुका था। तो दूसरी ओर 'कामायनी' से अवकाश निकालकर प्रसाद जी ने 'एक घूँट' की सृष्टि की थी। स्पष्ट है कि रचनाकाल का यह भेद न के बराबर है।

दूसरी ओर प्रतीकात्मता, प्रेम-निरूपण, शैवदर्शन और आनंदवाद, नियतिवाद का चित्रण, ह्रदय और बुद्धि का संघर्ष एवं समन्वय और भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति आदि सूत्रों की अभिव्यंजना विवेच्य तीनों कृतियों में हुई है। यह बात दूसरी है की विवेच्य दार्शनिक विचारों की दृष्टि से 'कामना' और 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामायनी' अधिक प्रौढ़ रचना है। अस्तु विवेच्य सूत्र तीनों रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है । अत: 'कामना' और 'एक घूँट' को 'कामायनी' सृजन की प्रक्रिया में दो प्रमुख विराम-स्थल ही नहीं अपितु भूमिका या पूर्वरूप भी कहा जा सकता है।

जहाँ तक काव्यरूप का संबंध है 'कामायनी' में नाट्यत्व और 'कामना' व 'एक घूँट' में काव्यत्व का पूर्णत: अभाव नहीं है। अत: स्पष्ट है कि काव्यरूप की दृष्टि से 'कामना', 'एक घूँट' और 'कामायनी' एक ही कोटि की रचनाएँ हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है की 'कामना' और 'एक घूँट' की परिपक्व एवं महाकाव्यात्मक अभिव्यक्ति 'कामायनी' में हुई है। इस दृष्टि से 'कामना' और 'एक घूँट' को 'कामायनी' की पूर्वपीठिका कहना तर्क-संगत प्रतीत होता है।